

ग्रेट रेज़िगनेशन

हाल ही में कोवडि-19 के बाद बड़ी संख्या में लोग "एंटीवर्क" के सिद्धांत को अपनाकर अपनी नौकरी से बाहर निकल रहे हैं विशेष कर अमेरिका और यूरोपीय देशों में।

- यूएस ब्यूरो ऑफ लेबर स्टैटिस्टिक्स (BLS) के अनुसार, अगस्त 2021 में रिकॉर्ड 4.3 मिलियन लोगों ने इस्तीफा दिया, जो जुलाई से 2,42,000 अधिक है।
- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एंथनी क्लॉटज़ ने इसे "ग्रेट रेज़िगनेशन" कहा है जो कार्य-जीवन समीकरण में प्राथमिकताओं को फरि से तैयार करने का आह्वान है।

प्रमुख बद्दि:

- **कोवडि का प्रभाव:**
 - कार्य से बाहर निकलने वालों में प्रमुख रूप से **खुदरा और आतथिय क्षेत्र के वे कर्मचारी** शामिल हैं जो नौकरी बदलने या अपने क्लिपों का पुनरमूल्यांकन करने के इच्छुक थे।
 - मध्य और पूर्वी यूरोप के कई देशों ने **कुशल श्रम शक्ति में गरिावट दर्ज की है।**
 - हालाँकि यह मज़बूत सामाजिक सुरक्षा जाल के कारण हो सकता है।
 - महामारी और लॉकडाउन के मध्य जीवित रहना और इसका सामना करना कई लोगों को 'काम-मुक्त' जीवन को एक व्यवहार्य क्लिप के रूप में देखने हेतु प्रेरित करता है।
- **'ग्रेट रेज़िगनेशन' का महत्त्व**
 - कम वेतन, अव्यावहारिक कार्य समय-सीमा और खराब लीडरशिप या बॉस आदि से संबंधित समस्याओं ने 'ग्रेट रेज़िगनेशन' को और अधिक बढ़ावा दिया है।
 - इसका मतलब यह भी है कि इन श्रमिकों के पास अपने मौजूदा नियोक्ताओं से परे बाज़ार मूल्य मौजूद हैं और वे इससे अधिक बेहतर रोज़गार प्राप्त कर सकते हैं।
 - वे बेहतर नौकरी के अवसर प्राप्त करने या स्टार्ट-अप चुनने के लिये अपने अनुभव पर भरोसा करते हैं।
 - एक सामान्य आशंका यह भी है कि क्षमता निर्माण में पर्याप्त पूंजी आवंटन नहीं किया गया है।
- **भारत की स्थिति:**
 - सामाजिक सुरक्षा और बेरोज़गारी लाभ की अनुपस्थिति के कारण भारत में ऐसी कोई घटना नहीं देखी गई है।
 - नौकरियों से बाहर निकलने की विलासिता या विशेषाधिकार भारत में अधिकांश लोगों के लिये उपलब्ध नहीं था।
 - हालाँकि 'रिमोट वर्किंग' या 'वर्क फ्रॉम होम' ने कॉर्पोरेट्स और कर्मचारियों के लिये लचीले वर्क मॉडल को संभव बना दिया है।
 - इससे टयिर-II और टयिर-III शहरों में लोगों की नौकरियाँ जा रही हैं। जसिसे भारत की स्थानिक अर्थव्यवस्था में बदलाव आ रहा है।
 - साथ ही वर्क फ्रॉम होम ने बाज़ार में मांग संरचना में बदलाव को गति दी है।
 - इसके अलावा भारतीय आईटी और आईटीईएस क्षेत्रों में भी लोग अपनी नौकरी बदल रहे हैं।
 - कई स्टार्ट-अप यूनिकॉर्न बन गए हैं और कई थोक में काम पर रख रहे हैं तथा काफी अधिक भुगतान करने के लिये तैयार हैं।

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस